Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पर्यावरण और जल समस्या

डॉ. एम. बी. वाणवी*

पर्यावरण समस्या विश्व स्तरीय है। पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव विश्व के समस्त क्षेत्रों पर पडता है, इसलिए विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की कल्पना की गई। इसके लिए 1972 में स्वीडन में विश्व स्तरीय शिखर संमेलन आयोजित हुआ। यह सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र संघ का पर्यावरण कार्यक्रम था, इस कार्यक्रम में 6 जून पर्यावरण दिवस निश्चित कर दिया गया। पर्यावरण संगठन की अध्यक्षता सुनीता नारायण ने अपने वक्तव्य में कहा था कि - ''अब समय आ गया है की हम अपनी मूर्खता से बाहर निकलें और निश्चित करें की हमें तीव्र विकास चाहिए अथवा पर्यावरण सुरक्षा।''

पर्यावरण संरक्षण का केन्द्रिय विषय प्राकृतिक एवं पारिस्थितिक पर्यावरण पर मानव कार्यालय का दबाव घटाना अथवा न्यूनतम करना है। यह पर्यावरण में निहित संशाधनों का अत्यधिक उपभोग, अवांछित उपभोग तथा दुरूपयोग न करने का प्रयास है। पर्यावरण संरक्षण का मूल मंत्र है स्वस्थ पर्यावरण में स्वस्थ मानव, स्वस्थ मानव का स्वस्थ दिमाग, तात्पर्य यह है की पूर्ण स्वस्थवर्धक वातावरण बनाना। हमारे कई पुराने ग्रंथो में भी इस बात का जीक्र किया गया है, खासतोर पर ऋग्वेद की कई ऋचाओं में पृथ्वी, जल, वायु तथा आकाश को माँ, पिता, पुत्री की तरह स्वीकारा है।

चरक संहिता में महर्षि अग्निवेश पर्यावरण प्रदूषण का मूल कारण को इस तरह अभिव्यक्त किया है - "वायु आदि समस्त तत्वों के प्रदूषण की जल अधर्म प्रकृति और समाज के नियमों का उल्लंधन है। अधर्म का कारण पूर्वकृत बुरे कार्य और अधर्म दोनों की उत्पति का कारण जानबूज कर किया गया अपराध है। ब्राहमण पुराण में पर्यावरण हास को 4 अवस्थाओं से अभिव्यकत किया है - प्रथम अवस्था में गंगा क्षीण होने लगेगी, द्वितीय अवस्था में गंगा के नैसर्गिक तत्व नष्ट हो जाएंगे, नदियाँ और भी क्षीण और विलुप्त हो जाएगी। तृतीय अवस्थामें गंगा डोरी के समान क्षीण हो जायेगी फिर प्रलय के समय समस्त सृष्टि नष्ट हो जायेगी। इसीलिए किसीने ठीक ही कहा है कि –

---

*डॉ. एम. बी. वाणवी **,** प्राध्यापक - हिन्दि विभाग, श्री जी. के. & सी. के. बोसमिया कोलेज, जेतपुर

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

"जल संरक्षण किजीए, जल जीवन का सार,

जल न रहे यदि जगत में, तो यह जीवन है बेकार"

बढते जल संकट से निपटने की प्रक्रिया में हडबडी भविष्य के लिए खतरा पैदा कर सकती है। जल वस्तुत : जीवन है, जल सृष्टि का मूल है और विश्व के सभी धर्मो के अनुरूप जल ही ब्रह्म है। आज जब विश्व 22वीं शताब्दी की दहलीज पर खडा है, तब यह सोचना बेहद जरूरी है की पूरे विश्व की प्यास कैसे बुजा पाएगे । जिस प्रकार आज हम विश्व के स्तर पर 'एडस कैंसर' नामक बीमारी के लिए अरबों रुपये खर्च करके विश्व को जगाने में लगे है, क्या उसी तरह यह भी जरूरी नहीं है कि पूरे विश्व में 'जल संरक्षण की अनिवार्यता को मुद्दा बनाकर जबरदस्त अभियान चलाय जाए, विशेष रूप से अपने देश भारतमें, प्राथमिक & माध्यमिक और कोलेज स्तर की शिक्षा में जल संरक्षण अनिवार्य विषय के रूप में आगामी पीढी को पढाना होगा। जल संरक्षण के साथ - साथ हमें 'जल अपव्यय एवं दुरूपयोग' के विषय में भे जबरदस्त अभियान छेडकर शहरों और गाँवो में हमारे पूरे समाज के भविष्य की बर्बादी है।

वर्तमान जल समस्या से व्यापक दुरदृष्टि से ही निपटा जा सकता है। अतएव कुछ तात्कालिक के साथ दीर्धकालिन उपाय भी करने होंगे। नदी जोड परियोजना पूर्णतः मांग आधारित है । लेकीन व्यापक हल के लिए कूछ और करना होगा । भारत में वैसे भी पानी की कमी है और विश्व दिन - प्रतिदिन गरम होता जा रहा है। हम ऐसे समय काल में प्रवेश कर गए है । जिसमें बिना सोचे समजे पानी की आपूर्ति करना खतरनाक सिध्ध हो सकता है। आवश्यकता है कि तुरंत समाजिक संवेदनशील और आर्थिक व्यवहार्य जल प्रबंधन किया जाए। यदि हम एक लोकतांत्रिक एवं प्रभावशील जल प्रबंध प्रबंधन ढाँचा बनानें में असफल रहते है तो हमारे प्रशासन का लोकतांत्रीक ढांचा संकट में पड सकता है। क्योंकि उग्र सामजिक स्थितियां हिंसा को उकसा सकती है।भारत में यदि जल के बढते संकट को देखें तो दो बातें उभर कर सामने आती हैं। एक तो पानी की मात्रात्मक उपलब्धता में कमी आ रही हैं और मांग दिनों दिन बढती जा रही है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में पिछले कुछ दशकों में तापमान में एक डीग्री की बढोतरी हो गई है। यह बढोतरी हिमालय में स्थानीय कारणों से और भी ज्यादा हुई है। हिमालय में बर्फ पडना कम हो गया है। जल के भंडार भी तेजी से पिधलने लगे है। हिमालय के 90 प्रतिशत ग्लेशियर पीछे हट रहा है। इससे पानी के लिए संघर्ष बढ रहा है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

भारत की जनसंख्या में प्रतिवर्ष औसतन 1.9 प्रतिशत की दर से वृध्धि हो रही है । इसके चलते सन 2040 तक या इससे पहले ही भारत विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश हो जाएगा। इतनी बडी जनसंख्या के लिए जीवन के आवश्यक मूल तत्व में जल को उप्लब्ध कराना सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। जल की उपलब्धता जहाँ पेयजल के रूप में है वहाँ खेतीबाडी के लिए जल की अति आवश्यकता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। आजकल जल की उपलब्धता कम होती जा रही है। हकीकत तो यह है कि गाँवो और शहरों में दिन-प्रतिदिन पेयजल का संकट गहराता जा रहा है। इसके पीछे कारण चाहे पेडों का कटान हो अथवा बढती जनसंख्या या वर्षा जल संचयन का अभाव। एक मुख्य कारण जल संकट का यह भी हो सकता है की भारत में वर्षा केवल कुछ माह तक सीमित है और वह भी अनिशिच्त है। इस लिए जनसंख्या के साथ ही फसलों पर भी उसका प्रतिकुल प्रभाव पडना स्वाभाविक है। एक अनुमान के अनुसार पृथ्वी पर मौजुद 15 फिसदी जल खारे समुद्रों में जमा है और शेष पाँच प्रतिशत बर्फ के रूप में है। बर्फ पिधलने से मिलने वाले महज एक फिसदी पानी का उपयोग पीने और सिंचाई के लिए हो सकता है। लेकीन इसका 75 प्रतिशत हिस्सा ही विभिन्न कारणों से प्रदुषित है और इस्तेमाल के लिए उपयुक्त नहीं है। ऐसा माना जाता है की कुछ ही वर्षो में भारत में गंभीर जल संकट पैदा हो सकता है।

यही नहीं ग्लोबल वार्मिग की वजह से हिमालय तेजीसे पीधल रहा है। उतर भारत के राज्यों में पानी का स्त्रोत हिमालय ही है। लेकीन उतर भारत राज्यों में भूमिगत जल तेजी से नीचे चला जा रहा है। आज देश के 50 प्रतिशत जिले पानी की दृष्टि से सूखे क्षेत्रों की श्रेणी में आते है। राजस्थान के अलावा बिहार, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश के अधिकांश जिले बराबर सुखे की जपेट में आते रहते है। मध्यप्रदेश, दिल्ली और गुजरात में यहाँ तक की केरल में भी जहाँ की जल की विपुल संभावनाएँ हैं लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है। भारत की 80 प्रतिशत आबादी स्वच्छ जल हेतु भुजल पर निर्भर है। पेयजल की समस्या के साथ ही प्रदुषित जल की समस्या भी विकट है। आज हमारे देश में लगभग 22 बडी नदियाँ प्रदुषिण की शिकार है । विश्व जल आयोग ने गंगा नदी को विश्व की सात प्रदूषित नदियों में से एक माना है। हम इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं कर सकते कि जल तथा उतरजीविता में अट्रट सम्बन्ध है, इसलिए घटते भुजल स्तर तथा उसके परिणाम स्वरूप जल में लोह जैसे अनेक तत्वों की प्रधानता से हमारे सामने स्वास्थ्य की समस्या भी उत्पन्न हुई है। ऐसा माना जाता है कि विश्व को सो व्यकित में से केवल 1 व्यकित को स्वच्छ जल नशीब हो रहा है। जिसके

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कारण दुनिया भर में हर वर्ष 30 लाख लोगों की मौत दूषित जल पीने से होनेवाली बिमारियों से हो रही है।

इसलिए आज समय़ की मांग है कि पानी का विवेक सम्मत तरीके से उपयोग किया जाए और भूजल के रिचार्ज तथा डिस्चार्ज में संतुलन स्थापित किया जाय। हमें इस तथ्य पर भी ध्यान देना जरूरी है कि खराब जल प्रबन्धन ही दूषित जल की आपूर्ति हेतु जिम्मेदार है। अत: जलापूर्ति निकायों की यह जिम्मेदारी है कि वह नागरिकों को स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करें आज जल संकट से जुझ रहे समाज ने नदी को तालाब से जोडने गहरे कुओं से तालाब भरने, पहाड पर नालियाँ बनाकर उसका पानी तालाब में जुटाने जैसे अनेक प्रयास किए है और प्रकृति के प्रहार पर विजय पाई है । यह जरूरी है कि लोग अपने क्षेत्रों पारंपरिक जल संशोधनो जैसे तालाब, कुओं आदि की सुधि ले, उनकी सफाई करे, उन्हें स्वच्छ रखे ताकि हमें पीने का स्वच्छ पानी मिले। जल संसाधन जल के वे स्त्रोत हैं, जो मनुष्यों के लिए उपयोगी है, जल के उपयोग में कृषि, औध्योगिक, घरेलू एवं पर्यावरणीय गतिविधियाँ शामिल है। वास्तव में इन सभी मानव उपयोगों के लिए स्वच्छ जल की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर 97% लवणीय जल है और स्वच्छ जल मुश्किल से 2% है। इस संसार की साफ एवं स्वच्छ जल की पूर्ति तीव्र गति से कम हो रही है क्योंकि जनसंख्या की वृध्धि से जल की मांग भी बढ रही है।

ज़ल प्रदूषण का प्रभाव जलीय जीवन एवं मनुष्य दोनों पर पडता है। जलीय जीवन पर जल प्रदूषण का प्रभाव पाद्यों एवं जन्तुओं पर परिलक्षित होता है। औध्योगिक अनेक विषैले प्रदार्थ जलीय जीवन को नष्ट कर देते है। जल प्रदूषण जलीय जीवन की विविधता को घटा देता है। इस तरह स्पष्ट है कि जल प्रदूषण से अनेक पाद्यों एवं जंतुओं का विनाश हो जाता है। एक अनुमान के अनुसार भारतमें होनेवालीं दो तिहाई बीमारियों प्रदूषित पानी से होती है। जल प्रदूषण से बचाव हेतु सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हमें जल प्रदूषण को बढावा देनेवाली प्रक्रियाओं पर ही रोक लगा देनी चाहिए। जन साधारण के बीच जल प्रदूषण के कारणों, दुष्प्रभावों एवं उनकी रोकधाम की विधियों के बारे में जागरूकता बढानी चाहिए, ताकि जल का उपयोग करनेवाले लोग जल को कम से कम प्रदूषित करे। आज संपूर्ण विश्व के सामने जल संकट की जो गंभीर चुनौती आ खडी हुई है। उसका सामना तभी किया जा सकता है, जब केन्द्र और राज्य सरकारों और उनकी विभिन्न एजेंसियों के साथ साथ समाज भी अपने हिस्से की जिम्मेदारी का सही तरीके से पालन करें ।